International Journal of HumanitiesAnd Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 22-09-2024, Accepted: 23-10-2024, Published: 07-11-2024
Volume 10, Issue 6, 2024, Page No. 1-3

धनायचा (श्योपुर) का जैन पुरा–वैभव

मनोज कुमार[1], डॉ. संतोष शर्मा[2]
[1] इतिहास विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] आचार्य, इतिहास विभाग, माधव महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मध्यप्रदेश के सुदूर उत्तरी सीमांत पर चंबल संभाग के अंतर्गत श्योपुर जिला अपने असीम जैन पुरामहत्व के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में देखा जा सकता है। दूबकुण्ड, धनायचा, भुरवदा, नागदा, हासलपुर, श्योपुर, वितारा आदि श्योपुर जिले के प्रमुख कलाकेंद्र हैं। इनमें आरक्षित वन्यक्षेत्र में स्थित धनायचा लगभग १४वीं शती ईस्वी के जैन मंदिर समूह, मूर्तिशिल्प एवं अभिलेखों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन अभिलेखों से इस स्थल का दिगम्बर जैन भटटारकों द्वारा संचालित होने का भी अनुमान होता है। वर्तमान में इस स्थल के मंदिर एवं मूर्तियां भग्नावशेषों के रूप में बदल चुके हैं, परंतु इन्हें देखकर इस स्थल की भव्यता सुस्पष्ट होती है।

मूलशब्दः कच्छपघात, सहरिया, धन्नासेठ, चंद्रप्रभ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, विजयकीर्ति, विजयपाल, हमीरदेव

मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले की वीरपुर तहसील के अंतर्गत ग्राम धनायचा अपने जैन पुरावैभव के लिए चंबल संभाग का एक प्रमुख पुरास्थल है। वैसे तो संपूर्ण श्योपुर जिले से ही जैन महत्व के अनेकानेक मंदिर एवं मूर्तिशिल्प के उदाहरण प्राप्त होते हुए हैं। श्योपुर की कराहल तहसील में स्थित दूबकुण्ड तो उत्तर भारत के राजनैतिक इतिहास में विशेष महत्व रखता है। इस स्थल से विदित कच्छपघात शासक विक्रमसिंह के संवत ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमवार (१०८८ ईस्वी) के एक बृहद पाषाण अभिलेख से इस क्षेत्र में लगभग ११वीं–१२वीं शती ईस्वी में कच्छपघात राजवंश के शासन की पुष्टि होती है। कच्छपघातों की इस शाखा को दूबकुण्ड के कच्छपघातों के नाम से जाना जाता है। यह अभिलेख वर्तमान में गूजरीमहल संग्रहालय, ग्वालियर दुर्ग में सुरक्षित है। दूबकुण्ड जेन मंदिर एवं मूर्तिशिल्प का बहुत बड़ा केंद्र रहा था। यहां से अन्य कई जैन अभिलेख भी ज्ञात हुए हैं। आज भी दूबकुण्ड में जैन मंदिरों एवं मूर्तियों के भग्नावशेष देखे जा सकते हैं।

श्योपुर में किला रोड पर स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में स्थापित बलुआ पाषाणनिर्मित एक मानस्तंभ को जैन कला की दृष्टि से सर्वप्राचीन पुरातत्वीय प्रमाण के रूप में देखा जाता है। इस मानस्तंभ पर अंकित संवत् 1087 (१०३० ईस्वी) के अभिलेख में आचार्य श्री कमलदेव के शिष्य माणिक्यदेव द्वारा इसका निर्माण करवाने का उल्लेख हुआ है। इनके अलावा श्योपुर जिले के नागदा, भुरवदा, बघेर, धनायचा, रदेव, सोई, हासलपुर आदि से भी जेनावशेष प्राप्त हुए हैं। श्योपुर के जैन मंदिरों में भी काफी संख्या में धातु एवं पाषाणनिर्मित प्राचीन जैन प्रतिमाएं एवं यंत्रपटट विराजमान हैं। श्योपुर जिले की यह समस्त जैन सामग्री लगभग 10वीं शती ईस्वी से लेकर २०वीं शती ईस्वी के मध्य की निर्धारित की जा सकती है। इनमें से काफी प्रतिमाओं पर अभिलेख भी अंकित मिलते हैं। धनायचा ग्राम भी जैन मंदिर वास्तु एवं मूर्तिशिल्प की दृष्टि से श्योपुर जिले का एक महत्वपूर्ण स्थल है। यह स्थल जिला मुख्यालय श्योपुर से करीब ४४ किमी की दूरी पर आरक्षित वन्यक्षेत्र में स्थित है। श्योपुर से ढोढर होते हुए धनायचा पहुंचा जा सकता है। संभागीय मुख्यालय मुरेना से जौरा, कैलारस, सबलगढ, वीरपुर, टेंटरा, टर्रा होते हुए ढोढर मार्ग पर हासलपुर और वहाँ से नहर एवं छोटी रेल्वे लाईन पारकर इस ग्राम तक पहुंचा जा सकता है। ग्वालियर से घाटीगांव, मोहना, बड़ोदा, विजयपुर, टेटरा, श्यामपुर होते हुए इस ग्राम से तक पहुंचा जाता है। यह ग्राम चंबल नदी के निकली बड़ी नहर को पार करके जाया जाता है। धनायचा ग्राम से यह जैनस्थल करीब ४५ किमी की दूरी पर एक नाले के किनारे अवस्थित है। यह ग्राम सहरिया आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है। स्थानीय अनुश्श्रुतियों में इस जैन पुरास्थल पर स्थापित भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा को 'धनासेठ' या 'धन्नासेठ' के नाम से पुकारा जाता है। ग्रामीणजनों का मानना है कि धन्नासेठ पत्थर के हो गये हैं। वह यह भी कहते है कि धन्नासेठ का एक अन्य भाई भी पत्थर का हो गया था। उसकी मूर्ति बरसाती नाले में पड़ी हुई है। अभी कुछ माह पूर्व श्योपुर जिले के शोध–सर्वेक्षण के दौरान मुझे इस स्थल को देखने का अवसर मिला। आज भी २३वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की बलुआ पाषाणनिर्मित करीब १२ फुट उंचाई की एक विशाल पद्मासन प्रतिमा यहां देखी जा सकती है। इस प्रतिमा को ग्रामीणजन धनासेठ के नाम से पुकारते हैं, परंतु वर्तमान स्थिति में यह स्थल बुरी तरह जीर्ण–शीर्ण स्थिति में पड़ा हुआ है। यहां पूजा–पाठ के भी कोई चिन्ह नहीं दिखाई देते हैं। पूवर्गामी अध्ययनों की दृष्टि से देखें तो इस स्थल की सर्वप्रथम सूचना एम. बी. गर्दे की रिर्पोट्स में मिलती है। इस स्थल के कुछ अभिलेखों का उल्लेख हरिहर निवास द्विवेदी, माइकेल डी. विलिस, आर. के. शर्मा ने भी किया है। द्विवेदी ने इस स्थल का उल्लेख धनेच नाम से किया है। नवनीत कुमार जैन एवं अरविन्द कुमार सिंह ने अपने एक आलेख में इस स्थल के मंदिरों, मूर्तियों एवं अभिलेखों का विस्तृत विवरण दिया है। इन्हीं दोनों लेखकों ने अपनी एक पुस्तक में भी इस स्थल के अभिलेखों का पाठन एवं विवरण दिया है।६ वर्तमान स्थित में यह जैन पुरास्थल पाषाणखण्डों के एक बड़े ढेर के रूप में बदल चुका है। यहां स्थिति अधिकांश मंदिर एवं मूर्तियां बुरी तरह खण्डित एवं भग्न हो चुकी हैं। पूरा स्थल अस्त–व्यस्त अवस्था में भग्नावशेषों के रूप में बदल चुका है। इस स्थल को देखने पर मूर्तिभंजकों की निर्दयता एवं धार्मिक उन्माद का अनुमान लगाया जा सकता है। इस स्थल की एकमात्र तीर्थंकर पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा का सिरोभाग ही पता नहीं किस तरह से भग्न होने से बच सका था, जबकि करीब ५० से अधिक अन्य लघुकाय जिन प्रतिमाएं बहुत ही बुरी तरह तोड़ी गई हैं। इस स्थल के करीब २४–२५ जिनालय भी अब बुरी तरह ध्वस्त हो चुके हैं। उनका मलबा चारों ओर बिखरा

हुआ पड़ा है। मंदिरों के सारे शिल्पांकन युक्त वास्तुअंग भी ढेर में पड़े हुए हैं। प्राकृतिक कारणों से भी इन प्रतिमाओं का अब बुरी तरह क्षरण हो रहा है। सिंह एवं जैन के अनुसार यह क्षेत्र चौबीसी जिनालय के रूप में बना हुआ था और भगवान् पार्श्वनाथ इस क्षेत्र के मूलनायक जिन थे। इन मंदिरों के चारों ओर चारदीवारी के प्रमाण भी दृष्टिगत होते हैं, परंतु दीवारों का अधिकांश हिस्सा अब ढ़ह चुका है। यह चारदीवारी गढ़े हुए पाषाणखण्डों से निर्मित है। मंदिर परिसर के साथ मठ के अवशेष भी देखे जा सकते हैं। चूंकि मंदिर परिसर का अधिकांश हिस्सा मलबे के ढेर के रूप में बदल चुका है और यह भी दिखाई देता है कि सोना–चांदी आदि के लालच में लोगों ने इस स्थल पर खुदाई भी की है। इससे भी यह स्थल और अधिक अस्त–व्यस्त हुआ है। सिंह एवं जैन के अनुसार वास्तु–संरचना की दृष्टि से इस मंदिर परिसर के अंतर्गत मध्यभाग में एक बृहदाकार खुला चौक एवं उसके चारों ओर लघु आकार के २४ जिनालयों का विधान हुआ था। मूलनायक पार्श्वनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार के सिरदल पर ललाटविंब में लघु आकार की एक पदमासन जिनाकृति का अंकन मिलता है। इसी सिरदल पर उत्कीर्ण संवत् १३६० (१३३३ ईस्वी) के अभिलेख से स्पष्ट होता है कि इस मंदिर का निर्माण १३३३ ईस्वी में हुआ था। इस अभिलेख का अधिकांश हिस्सा अब अपठनीय स्थिति में पहुंच चुका है।

करीब १२ फुट उंचाई की पदमासन पार्श्वनाथ की मूलनायक प्रतिमा इस स्थल की सुंदर कृति है। इस स्थल पर यही एकमात्र प्रतिमा है, जिसका मुख खण्डित नहीं हो सका है। इसे चमत्कार ही माना जा सकता है। हालांकि मुखभाग पर नाक आंशिक रूप से खण्डित है और साथ ही सर्पफण भी थोड़ा खण्डित हुआ है। इस प्रतिमा के सिर के उपर सात सर्पफणों के विशाल छत्रावली शोभित है। इस प्रतिमा का निचला हिस्सा जमीन में दबा हुआ है। इस कारण प्रतिमा के सिंहासन आदि अवयवों के बारे में स्पष्ट तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। पार्श्वनाथ के कंथों पर केश–शिखाएं भी देखी जा सकती हैं। उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स, घुंघराले केश, लंबकर्ण, नाभि आदि भी दिखाई देते हैं। पार्श्वनाथ के वक्षस्थल पर लोगों ने सफेद रंग से कुछ लिख भी दिया है। इस प्रतिमा का सबसे ऊपरी हिस्सा टूट गया है और पीछे जमीन पर पड़ा हुआ है। इस मूर्तिखण्ड पर मध्यभाग में त्रिछत्र और चारों ओर विभिन्न मुद्राओं में देवाकृतियों का रूपांकन मिलता है।

इस पुरास्थल की वर्तमान अवस्था को देखने पर अनुमान होता है कि सम्मुखवर्ती मूलनायक पार्श्वनाथ मंदिर के तीनों ओर छोटे आकार के देवालय बने हुए थे। ये भी अधिकांशतः अब ढह चुके हैं। इन मंदिरों की दीवारें ही अब देखी जा सकती हैं। ऐसा जान पड़ता है कि लघु आकार के इन मंदिरों में केवल एक गर्भगृह का ही निर्माण किया गया था। यह भी संभव है कि इन मंदिरों के सम्मुख संयुक्त मण्डप रहा होगा। इनमें से अधिकांश मंदिरों की आंतरिक एवं बाह्य भित्तियाँ सादी थीं। कुछ मंदिरों के प्रवेशद्वारों पर अलंकरण दिखाई देते हैं। अधिकांश मंदिरों की छत भी अब गिर चुकी है। वर्तमान स्थिति में छोटे आकार के इन मंदिरों में एक ही जिन प्रतिमा दिखाई देती है, वह भी बुरी तरह खण्डित हैं और जमीन पर पड़ी हुई हैं। इन बिखरी मूर्तियों से दिखाई देता है कि इनमें से अधिकतर जिन पदमासन मुद्रा में सादे आसन पर स्थापित रहे थे। कुछ प्रतिमाओं पर लांछन एवं अभिलेख भी देखे जा सकते हैं। इनमें से प्रायः मूर्तियों पर संवत् १३६० (१३३३ ईस्वी) तिथियुक्त अभिलेख उत्कीर्ण हुए हैं। पुनः स्पष्ट हो जाता है कि इन मंदिरों का निर्माण 1333 ईस्वी में हुआ था। अवशिष्ट लांछनों के आधार पर जिन प्रतिमाओं में चंद्रप्रभ, नेमिनाथ और पार्श्वनाथ की पहचान ही हो सकी है। कुछेक प्रतिमाओं के कायोत्सर्ग में होने के भी संकेत मिलते हैं।

मंदिर परिसर के पीछे की ओर मठ होने के भी संरचनात्मक भवनावशेष देखे जा सकते हैं। इनमें बायीं ओर की चारदीवारी से जुड़े कुछ कक्षों का निर्माण किया गया है। ये कक्ष भी अब काफी कुछ ढह चुके हैं। सामने की चारदीवारी पर लघु आकार की कुलिकाएं भी बनी हुई हैं। इन कुलिकाओं में से तीन के ऊपर अभिलेख भी अंकित हैं। ये कुलिकाएं साधारण एवं अलंकरणहीन हैं।

मंदिर परिसर के निकट एक बरसाती झरना भी बहता है, परंतु वर्तमान में यह पूरी तरह से सूखा बना हुआ है। इस झरने की तलहटी में एक विशालकाय प्रतिमा सिर के बल गिरी हुई पड़ी है। ग्रामीणजनों का विश्वास है कि यह धन्ना सेठ के दूसरे भाई थे, जो पत्थर के हो गये थे। इसके आसपास भी कई भग्न जिनविंब पड़े हुए हैं। मंदिर परिसर के आसपास भी २०–२५ मीटर की दूरी तक खण्डित जिन प्रतिमाएँ एवं अन्य वास्तुखण्ड बिखरे हुए पड़े हैं। इस स्थल के केवल जैन मंदिरों के ही अवशेष प्राप्त होते हैं। शेव, वैष्णव या अन्य किसी संप्रदाय के किसी भी प्रकार के पुरावशेष नहीं मिले हैं।

एम. बी. गर्दे ने धनायचा से कुल १४ जैन मूर्तिलेख सूचित किये हैं और इन सभी पर संवत् १३६० तिथ्यांकित लेख अंकित हैं। द्विवेदी एवं विलिस ने भी अभिलेखों की यही संख्या दी है। सिंह एवं जैन को पूर्वसचित इन १४ मूर्तिलेखों में से केवल ६ अभिलेख ही मिल सके थे। इनके अलावा सिंह एवं जैन ने यहां के ५ नवीन अभिलेखों को भी सूचित किया है। इस स्थल की मलबा सफाई अत्यंत आवश्यक है ताकि अन्य अनेक सूचनाएं प्राप्त हो सके। इनके से अधिकांश अभिलेख अब बहुत बुरी अवस्था में है और उनका काफी क्षरण हो चुका है। इन पर काई की मोटी परत जमी हुई है। सिंह एवं जैन ने उनके पाठन का प्रयास किया है। उनके अनुसार इनमें अधिकांश लेखों की तिथि संवत १३६० चौत्र वदि १५ बृहस्पतिवार (१३३३ ईस्वी) है। ज्ञात होता है कि यहाँ मूलसंघ के भट्टारक श्री विजयकीर्ति का प्रभाव रहा था। श्री विजयकीर्ति की प्रेरणा से जैन श्रावकों ने इन मंदिरों का निर्माण करवाया था। इनके अलावा इन अभिलेखों में धर्मचंद्र, चंद्रदेव, विजय, साधु छाम्मले, उनके पुत्र साधु चादा की पत्नी श्रीजसूदे एवं उनके पुत्रों पद्मसेन, भुधार एवं ररांदेवा, भुवनपाल व उनकी पत्नी पीलू एवं उनके पुत्र माहरा, साधु इभा, इन्द्र, डोगुह, पणा, धरकु आदि के भी नाम मिलते हैं। कुलिकालेखों में लव उनके पुत्रों देय, लाहिण, दुव व गल्हे, साधु सिरपति एवं उनके पुत्रों जखौ व वचे, साधु रेपति, साधु देश व उनके पुत्रों वासुदेव, हरर्जित व द्वहा का उल्लेख हुआ है।१० निश्चित ही १३३३ ईस्वी तक यह स्थल एक जैनतीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका था। उक्त किसी भी अभिलेख में स्थानीय राजा का नाम नहीं मिलता है।

धनायचा से संवत् १३५१ चौत्र सुदि १ शुक्रवार (१२६४ ईस्वी) का एक अन्य अभिलेख भी मिला है, जिसमें ब्राह्मणों को भूदान देने के साथ ही वैद्यनाथ, महाराजकुमार सुरहाईदेव, महाराज श्री हमीरदेव एवं श्री विजयपालदेव का उल्लेख हुआ है।८ सिंह एवं जैन को यह अभिलेख नहीं मिल सका था।

इस स्थल को देखने से ज्ञात होता है कि अवश्य की कोई प्राचीन राजमार्ग इस स्थल से होकर निकलता होगा। इस मंदिर के आसपास अवश्य ही किसी प्राचीन बस्ती के पुरातत्वीय प्रमाण मिल सकते हैं, परंतु वन्यक्षेत्र होने के कारण यहां सर्वेक्षण काफी जोखिम भरा है। इन मंदिरों का भी आरंभिक स्तर पर मलबा सफाई होना अत्यंत आवश्यक है। इसके उपरांत ही इस स्थल के अध्ययन में अनेक नवीन सूचनाएं उद्घाटित हो सकेंगी।

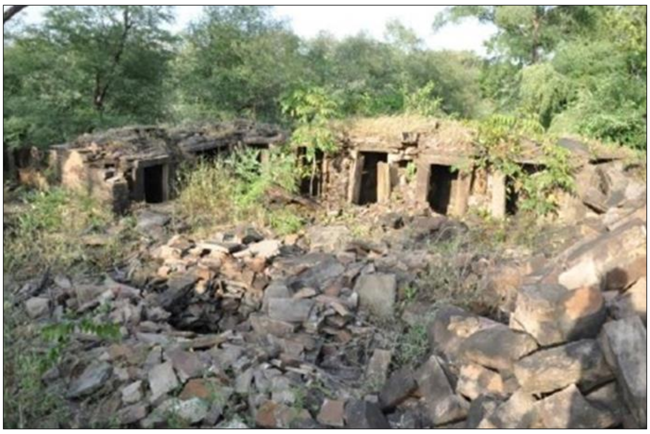

मंदिर–परिसर का विहंगम दृश्य, धनायचा

मंदिर परिसर में पदमासन पार्श्वनाथ, धनायचा

संदर्भ–ग्रंथ

1. सिंह, अरविन्द कुमार एवं जैन, नवनीत कुमार, इन्स्क्रिप्शन्स् आफ मुरैना श्योपुरः मटेरियल फार द हिस्ट्री आफ गोपाद्रि रीजन, बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली, २०१८, पृ. ४३–५०।
2. वही, पृ. ४१–४२।
3. जैन, नवनीत कुमार, मध्यप्रदेश के कुछ कच्छपघातकालीन प्राचीन जैन पुरास्थल, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, लखनउ, फरवरी २०२०, पृ. १६–२१।
4. गर्दे, एम. बी., ग्वालियर पुरातत्त्व रिपोर्ट, वि. सं. १६७३/ईस्वी १६१६–१७।
5. द्विवेदी, हरिहर निवास, ग्वालियर राज्य के अभिलेख, वि. सं. २००४, बनारस।
6. विलिस, माइकेल डी., इन्स्क्रिप्शन्स् आफ गोपक्षेत्रः मटेरियल फार द हिस्ट्री आफ सेंट्रल इण्डिया, १६६६, लंदन।
7. शर्मा, आर. के., मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, १६७२।
8. जैन, नवनीत कुमार एवं सिंह, अरविन्द कुमार, धनायचा के जैन मंदिर, मूर्तियां एवं अभिलेख, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, लखनउ, मार्च २०१८, पृ. २२–२४।
9. सिंह, अरविन्द कुमार एवं जैन, नवनीत कुमार, इन्स्क्रिप्शन्स् आफ मुरैना श्योपुरः मटेरियल फार द हिस्ट्री आफ गोपाद्रि रीजन, बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली, २०१८।
10. वही।
11. ग्वालियर पुरातत्व रिर्पोट वि. सं. १६८८/ ईस्वी १६३१–३२, पृ. १७रू द्विवेदी, हरिहर निवास, पूर्वोक्त, पृ. १६६ एवं विलिस, पूर्वोक्त, पृ. २१।